सरकारी एवं गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों के प्रधानाचार्यों की नेतृत्व शैली के संदर्भ में विद्यालयी वातावरण एवं अध्यापकों की कार्य संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन

आई. आई. एम. टी. विश्वविद्यालय मेरठ

के अन्तर्गत

शिक्षा शास्त्र विषय में

डॉक्टर ऑफ फिलॉसफी (पीएच॰डी॰) की

उपाधि हेतु प्रस्तुत

शोध की संक्षिप्त रूपरेखा

UGC Approved

Section 2(f) & 12B

शोधकर्ता

सुनीता कुमारी

नामांकन संख्या–**IIMTU/1970406**

शोध निर्देशिका

डॉ. रेनू गोयल, एसोसिएट प्रोफेसर

कॉलेज ऑफ एजुकेशन

शोध केन्द्र

आई.आई.एम.टी. विश्वविद्यालय

‘O Pocket’ गंगा नगर, मवाना रोड, मेरठ (उ.प्र)

शोध की रूपरेखा

- प्रस्तावना
- शोध कथन
- शोध समस्या में प्रयुक्त प्रत्ययों का संक्षिप्त विवरण
- शोध सहित्य सर्वेक्षण
- शोध अन्तराल
- शोध का महत्व
- शोध के उद्‌देश्य
- शोध के परिकल्पनाएँ
- शोध की परिसीमन
- शोध विधि
- शोध की जनसंख्या
- न्यायदर्श
- आँकड़ा संग्रह के लिए उपकरण
- चर
- शोध में उपयुक्त सांख्यिकी
- संभावित अध्याय
- संदर्भ ग्रथ सूची

प्रस्तावना

विद्यालय के प्रशासन में प्रधानाचार्य का महत्वपूर्ण स्थान होता है। वह शिक्षकों, छात्रों और स्कूल के अन्य सदस्यों को आवश्यक सलाह और मार्गदर्शन देकर शिक्षकों और छात्रों को प्रेरित करता है। शिक्षकों की प्रतिबद्धता में उनकी एक महत्वपूर्ण भूमिका है क्योंकि विद्यालय में शैक्षिक और गैर–शैक्षिक गतिविधियों और गैर–पाठ्यचर्या गतिविधियों सहित सब कुछ उनके द्वारा आयोजित किया जाता है। विद्यालय के विकास और सफलता में प्रधानाचार्य की प्रभावशाली भूमिका होती है, शिक्षकों की प्रगति, विकास और प्रतिबद्धता का स्तर उनके नेतृत्व शैली पर निर्भर करता है। विद्यालय में प्रधानाचार्य की प्रमुख भूमिका होती है और संस्था में होने वाली सभी गतिविधियाँ उसके इर्द–गिर्द घूमती हैं।

विद्यालय उस समाज का लघु रूप है जहां देश का भविष्य निर्मित होता है। विद्यालय बच्चों के समाजीकरण की प्रक्रिया की मुख्य सामाजिक एजेंसी है। कुशल नेतृत्व एक सफल शैक्षणिक संस्थान का मुख्य घटक है। स्कूल की पूर्णता और सुधार मुख्य रूप से प्रधानाचार्य के प्रशासनिक नेतृत्व शैली पर निर्भर करता है, क्योंकि वह पूरे शैक्षणिक संस्थान का प्रमुख है। किसी संस्था की सफलता और वृद्धि संस्था के प्रमुख द्वारा प्रकट नेतृत्व, प्रबंधन और नेतृत्व शैली की विशेषताओं और क्षमता पर आधारित होती है। स्कूल के उत्थान के लिए प्रिंसिपल की इच्छा के बिना, विद्यालय में कोई भी बदलाव संभव नहीं है।

संस्था के लक्ष्यों को महसूस करने तक प्रधानाचार्य जवाबदेह है। उनका रवैया, व्यक्तित्व और प्रशासनिक नेतृत्व शैली की प्रकृति शैक्षिक माहौल पर निर्भर करेगी। इसलिए, प्रधानाचार्य का प्रशासनिक नेतृत्व शैली स्कूल के माहौल से बहुत हद तक जुड़ा हुआ है। व्यवस्थापक संस्था की योजना, आयोजन, संचार और निर्णय लेने में एक प्रमुख भूमिका निभाता है। इसलिए, विद्यालय के वातावरण के अनुकूल और प्रभावी विकास के लिए प्रधानाचार्य की नेतृत्व शैली अध्ययन का एक महत्वपूर्ण घटक है।

कई आंतरिक और बाहरी घटक एक शिक्षक को प्रभावित करते हैं, जो बदले में शिक्षण प्रक्रिया पर प्रभाव डालता है। शिक्षक और छात्र, शिक्षक और प्रधानाचार्य और अन्य स्टाफ सदस्यों के बीच पारस्परिक संबंध शिक्षण–सीखने की प्रक्रिया में बहुत प्रभावशाली भूमिका निभाते हैं। स्कूल उन लोगों के बीच संचार और

बातचीत का एक केंद्र है जो नियमित रूप से एक साथ काम करते हैं। स्कूल की यह संवादात्मक वातावरण एक संगठनात्मक वातावरण की ओर ले जाती है। यह वातावरण, प्रधानाचार्य के प्रशासनिक नेतृत्व शैली से काफी हद तक प्रभावित है। सकारात्मक संस्थागत वातावरण को सफल विद्यालयों की नींव और छात्रों की शैक्षणिक सफलता का एक मजबूत भविष्यवक्ता माना जाता है। कई अध्ययनों ने इस तथ्य का पुरजोर समर्थन किया है कि प्रधानाचार्य का प्रशासनिक नेतृत्व शैली प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से स्कूल की वातावरण को प्रभावित करता है।

प्रशासनिक संगठन में निर्णय लेने की प्रक्रिया के अध्ययन को प्रशासनिक नेतृत्व शैली के रूप में भी जाना जाता है। यह एक संगठन के विकास और विकास की नींव रखता है। स्कूल प्रधानाचार्यों की नेतृत्व शैली में भिन्नताएं भी संस्था की वातावरण को प्रभावित करती हैं। स्कूल प्रधानाचार्यों के नियोजन, आयोजन, संचार और निर्णय लेने का व्यवहार संस्था के संगठनात्मक माहौल को निर्धारित करेगा।

किसी संस्थान की सफलता उसके कर्मचारियों की प्रेरणा के स्तर पर निर्भर करती है। संस्थागत प्रबंधन की महत्वपूर्ण भूमिकाओं में से एक शिक्षक के लिए एक सुखद कार्य वातावरण बनाने में एक संतुलित भूमिका निभा रहा है। संगठनात्मक वातावरण प्रभावी विद्यालय का एक महत्वपूर्ण घटक है। यह शिक्षकों को काम करने की प्रेरणा और उनके काम के प्रति समर्पण को प्रभावित करता है। शिक्षकों पर विद्यालय वातावरण के प्रभाव को समझने के लिए शिक्षकों की कार्य संतुष्टि का अध्ययन जरूरी है। शिक्षकों की कार्य संतुष्टि, विद्यालय को बेहतर बनाने के लिए महत्वपूर्ण है। शिक्षकों की अपने कार्य प्रदर्शन में सुधार लाने के लिए प्रेरित करने के लिए प्रशासकों की भूमिका एक सकारात्मक विद्यालय के माहौल को बढ़ा रही है।

विद्यालय वातावरण ने एक ऐसी भूमिका निभाई है जो एक संस्थान में उच्च्य क्षमता के व्यक्तियों कोपूर्ण समर्पण का भाव बना रही है। प्रेरणा लोगों को कार्रवाई के लिए प्रेरित करने और एक वांछित कार्य प्राप्त करने की प्रक्रिया है और स्वस्थ संगठनात्मक वातावरण एक व्यक्ति द्वारा व्यक्त वाहक से संबंधित लक्ष्य या विकल्प है।

विद्यालय वातावरण बहुत प्रेरक पहलुओं से जुड़ा हुआ है। प्रस्तुत शोध इन्हीं सब कारणों से संबंधित है जिसका मुख्य उद्देश्य **"सरकारी एवं गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों के प्रधानाचार्यों की नेतृत्व शैली के संदर्भ में विद्यालयी वातावरण एवं अध्यापकों की कार्य संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन"** की आवश्यकता है। प्रस्तुत शोध में तीन मुख्य चर है, विद्यालय वातावरण, अध्यापकों की कार्य संतुष्टि, तथा प्रधानाचार्यों की नेतृत्व शैली। इसलिए, यहां शोधकर्ती इन मनोवैज्ञानिक चरों की विस्तृत अवधारणा प्रदान करती है।

प्रधानाचार्य की नेतृत्व शैली किसी भी विद्यालय की सफलता में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। प्रभावी और कुशल प्रधानाचार्य के नेतृत्व वाले विद्यालय वांछित परिणाम लाते है। वे अपने शिक्षकों और छात्रों के लिए आदर्श हैं। उनके पास अपने विद्यालय की नियति को बदलने की शक्ति है। प्रधानाचार्य का नेतृत्व व्यवहार विद्यालय के वातावरण और शिक्षकों की संतुष्टि को प्रभावित करता है । यह स्कूल के बेहतर प्रदर्शन को भी प्रभावित करता है। इसलिए वर्तमान अध्ययन को कुछ चर के संबंध में प्रधानाचार्यों की नेतृत्व शैली की तुलनात्मक अध्ययन करने की योजना बनायी गयी है। नेतृत्व की शैली से तात्पर्य प्रधानाचार्यों द्वारा दिशा देने, योजनाओं को लागू करने तथा लोगों को प्रात्साहित करने की शैली से है। नेतृत्व की बहुत सी शैलियाँ हैं, जो राजनीतिक, व्यावायिक या अन्य क्षेत्रों में प्रदर्शित होती हैं।

कुछ मुख्य नेतृत्व शैलियाँ ये हैं–

- **अधिनायकवादी (Authoritaran)**
- **पितृसत्तात्मक (Paternistic)**
- **लोकतांत्रिक (Democratic)**
- **अहस्तक्षेपात्मक (Laissez-faire)**
- **लेन–देनात्मक (Transactional)**
- **परिवर्तनकारी (Transformational)**

शिक्षा किसी देश के सामाजिक–आर्थिक विकास में एक महत्वपूर्ण तत्व है। भारत में, माध्यमिक विद्यालय का माहौल छात्रों के भविष्य को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। सरकारी और निजी माध्यमिक विद्यालयों के बीच का अंतर महत्वपूर्ण है, जो संसाधनों, शिक्षण गुणवत्ता, बुनियादी ढांचे ओर समय शैक्षिक परिणामों में असमानताओं को दर्शाता है। इस थीसिस का उद्देश्य भारत में सरकारी और निजी माध्यमिक विद्यालयों में स्कूल के माहौल की व्यापक रूप से जांच करते हुए इन अंतरों का पता लगाना है। अध्ययन कई प्रमुख पहलुओं पर केंद्रित हैः बुनियादी ढांचा, शिक्षक की गुणवत्ता, छात्र–शिक्षक अनुपात, पाठ्येतर गतिविधियाँ और शैक्षणिक प्रदर्शन। बुनियादी ढांचा स्कूल के माहौल का एक मूलभूत पहलू है, जो छात्रों के सीखने के अनुभव और परिणामों को प्रभावित करता है। निजी स्कूलों में आम तौर पर सरकारी स्कूलों की तुलना में बेहतर बुनियादी ढांचा होता है। किंगडन (2007)[13] । इसमें अच्छी तरह से सुसज्जित कक्षाएँ, पुस्तकालय, प्रयोगशालाएँ और खेल सुविधाएँ शामिल हैं। सरकारी स्कूलों में पर्याप्त बुनियादी ढांचे की कमी अक्सर सीखने की प्रक्रिया में बाधा डालती है, जिससे दो प्रकार के स्कूलों के बीच शैक्षिक गुणवत्ता में अंतर पैदा होता है। मेहरोत्रा, (2006)[16]।

शिक्षक की गुणवत्ता सरकारी और निजी स्कूलों के बीच अंतर करने वाला एक और महत्वपूर्ण कारक है। निजी स्कूल उच्च वेतन और बेहत्तर कामकाजी परिस्थितियों तिलक (2009)[24] के कारण अधिक योग्य और अनुभवी शिक्षकों को आकर्षित करते हैं। इसके विपरीत, सरकारी स्कूल अक्सर योग्य शिक्षकों की कमी से पीड़ित होते हैं और शिक्षकों की अनुपस्थिति और प्रेरणा की कमी से संबंधित चुनौतियों का सामना करते हैं। कुमार (2016)[15]। यह असमानता प्रदान की जाने वाली शिक्षा की गुणवत्ता को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करती है। छात्र–शिक्षक अनुपात शिक्षा की गुणवत्ता का एक महत्वपूर्ण निर्धारक है। निजी स्कूलों में आमतौर पर छात्र–शिक्षक अनुपात कम होता है, जिससे अधिक व्यक्तिगत ध्यान और प्रभावी शिक्षण की अनुमति मिलती है। चुडगर और क्विन, (2012)[10]। इसके विपरीत, सरकारी स्कूलों में अक्सर छात्र–शिक्षक अनुपात अधिक होता है, जिसके

परिणामस्वरूप छात्रों पर कम व्यक्तिगत ध्यान दिया जाता है और परिणामस्वरूप, खराब शैक्षणिक प्रदर्शन होता है।

पाठ्येतर गतिविधियाँ छात्रों के समग्र विकास के लिए आवश्यक हैं। निजी स्कूल आमतौर पर खेल, कला और क्लब सहित पाठ्येतर गतिविधियों की एक विस्तृत श्रृंखला प्रदान करते हैं, जो छात्रों के समग्र विकास में योगदान करते है। अग्रवाल (2009)[1]। हालाँकि, सरकारी स्कूलों में अक्सर ऐसी गतिविधियाँ प्रदान करने के लिए संसाधनों और बुनियादी ढाँचे की कमी होती है, जिससे छात्रों के व्यापक विकास के अक्सर सीमित हो जाते हैं। शैक्षणिक प्रदर्शन स्कूल के माहौल की प्रभावशीलता का एक प्रमुख संकेतक है। अध्ययनों से पता चला है कि निजी स्कूलों के छात्र आम तौर पर सरकारी स्कूलों के छात्रों की तुलना में बेहतर शेक्षणिक प्रदर्शन करते हैं। देसाई एस अल. (2009)[6]। इसका श्रेय निजी स्कूलों में बेहतर बुनियादी ढांचे, उच्च शिक्षक गुणवत्ता और अधिक प्रभावी शिक्षण विघियों को दिया जा सकता है। यह अध्ययन भारत में सरकारी और निजी माध्यमिक विद्यालयों में स्कूल के माहौल का व्यापक विश्लेषण प्रदान करने के लिए मात्रात्मक और गुणात्मक डेटा को मिलाकर मिश्रित–पद्धति दृष्टिकोण को अपनाता है। देश के विभिन्न क्षेत्रों के स्कुलों के नमूने से सर्वेक्षण साक्षात्कार और अवलोकन के माध्यम से डेटा एकत्र किया जाता है।

शिक्षक की नौकरी की संतुष्टि शिक्षा की समग्र प्रभावशीलता और गुणवत्ता के लिए महत्वपूर्ण है। यह शोध भारत में सरकारी और गैर–सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में शिक्षकों के बीच नौकरी की संतुष्टि में अंतर की जांच करता है। कार्य वातावरण, वेतन, व्यावसायिक विकास के अवसर, प्रशासनिक सहायता और छात्र व्यवहार जैसे विभिन्न कारकों का विश्लेषण करके, इस अध्ययन का उद्देश्य इन दो क्षेत्रों में शिक्षक की संतुष्टि को प्रभावित करने वाले कारकों की व्यापक समझ प्रदान करना है। शिक्षक की नौकरी की संतुष्टि छात्र परिणामों, शिक्षक प्रतिधरण और शैक्षिक वातावरण को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करती है । इंगरसोल (2001)[11]। भारत में शैक्षिक प्रणाली में सरकारी और गैर–सरकारी (निजी) स्कूल शामिल हैं, जिनमें से प्रत्येक में अलग–अलग परिचालन रूपरेखाएँ हैं। यह

अध्ययन दोनों प्रकार के संस्थानों में शिक्षक की नौकरी की संतुष्टि में योगदान करने वाले कारकों की खोज करता है, जिसका उद्देश्य सुधार और नीति सिफारिशों के क्षेत्रों की पहचान करना है।

नौकरी की संतुष्टि एक बहुआयामी निमार्ण है जो विभिन्न आंतरिक और बाहरी कारकों से प्रभावित होती है। हर्जबर्ग (1959)[9] का दो–कारक सिद्धांत स्वच्छता कारकों (जैसे, वेतन, काम करने की स्थिति) और प्रेरकों (जैसे, मान्यता, काम खुद) के बीच अंतर बताता है । शैक्षिक संदर्भ में, शिक्षक कीनौकरी की संतुष्टि में कक्षा का माहौल, प्रशासनिक सहायता और पेशेवर विकास के अवसर जैसे तत्व शामिल होते हैं। डिनहम और स्कॉट (2000)[7]। सरकारी बनाम गैर–सरकारी स्कूलाकें में नौकरी की संतुष्टि पिछले अध्ययनों ने सरकारी बनाम गैर–सरकारी स्कूलों में नौकरी की संतुष्टि के बारे में मिश्रित परिणाम दिखाए हैं। जबकि कुछ शोध बेहतर संसाधनों और प्रशासनिक सहायता के कारण निजी स्कूल के शिक्षकों के बीच उच्च संतुष्टि स्तर का संकेत देते हैं। गुप्ता और गेहलावत (2013)[8]। अन्य अध्ययन महत्वपूर्ण संतुष्टि कारकों के रूप में सरकारी पदों से जुड़ी नौकरी की सुरक्षा और लाभों पर प्रकाश डालते हैं। चंद्रा (2010)[3]।

शिक्षक की नौकरी की संतुष्टि को प्रभावित करने वाले कारक

1. कार्य वातावरणः– कार्यस्थल की शारीरिक और मनोवैज्ञानिक स्थितियाँ शिक्षक कीी संतुष्टि को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करती हैं। सरकारी स्कूलों को अक्सर अपर्याप्त बुनियादी ढाँचे ओर बड़ी कक्षाओं जैसी चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। रामचंद्रन एट अल. (2018)[20]।

2. वेतन और लाभः– नौकरी की संतुष्टि के लिए प्रतिस्पर्धी मुआवजा एक महत्वपूर्ण कारक है। सरकारी शिक्षकों को आम तौर पर बेहतर नौकरी की सुरक्षा और लाभ मिलते हैं, जबकि निजी स्कूल के शिक्षकों का वेतन अधिक हो सकता है लेकिन सिरिता कम होती है। (किंगडन और टील, 2010)[14]।

3. व्यावसायिक विकासः— निरंतर व्यावसायिक विकास के अवसर उच्च नौकरी की संतुष्टि में योगदान करते हैं। गैर—सरकारी स्कूल अक्सर अधिक व्यावसायिक विकास के अवसर प्रदान करते हैं। OECD (2019) [18] ।

4. प्रशासनिक सहायताः— प्रशासन से प्रभावी नेतृत्व और सहायता शिक्षक की संतुष्टि में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। निजी स्कूलों में अक्सर अपने सरकारी समकक्षों की तुलना में अधिक सुव्यवस्थित और सहायक प्रशासनिक प्रथाएँ होती हैं। डे और सैमंस (2013)[5]।

5. छात्र व्यवहारः कक्षा प्रबंधन और छात्र व्यवहार शिक्षक की नौकरी की संतुष्टि को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करते हैं। सरकारी स्कूल के शिक्षकों को अक्सर बड़ी कक्षाओं और विविध छात्र पृष्ठभूमि के कारण अनुशासन संबंधी चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। सिंह और सरकार (2015)[23]।

यह अध्ययन शिक्षक की नौकरी की संतुष्टि पर व्यापक डेटा एकत्र करने के लिए मात्रात्मक सर्वेक्षण और गुणात्मक साक्षात्कार को मिलाकर मिश्रित—पद्धति दृष्टिकोण का उपयोग करता है। इस नमूने में भारत के विभिन्न क्षेत्रों के 15 माध्यमिक विद्यालय के शिक्षक शामिल हैं, जिनमें सरकारी और गैर—सरकारी स्कूलों का समान प्रतिनिधित्व है। विभिन्न संतुष्टि मापदंडों को मापने के लिए शिक्षकों को मानकीकृत नौकरी संतुष्टि प्रश्नावली वितरित की जाएगी। शिक्षकों के एक उपसमूह के साथ साक्षात्कार आयोजित किए जाएंगे ताकि उनके अनुभवों और धारणाओं में गुणात्मक अंतरदृष्टि प्राप्त की जा सके। सरकारी और गैर—सरकारी स्कूल के शिक्षकों के बीच नौकरी की संतुष्टि के स्तर की तुलना करने के लिए सांख्यिकीय विधियों का उपयोग करके मात्रात्मक डेटा को कोडित किया जाएगा और आवर्ती पैटर्न और थीम की पहचान करने के लिए विषयगत रूप से विश्लेषण किया जाएगा।

प्रारंभिक विश्लेषण से पता चलता है कि गैर—सरकारी स्कूल के शिक्षक अपने सरकारी समकक्षों की तुलना में समग्र नौकरी संतुष्टि की रिपोर्ट थोड़ी अधिक करते हैं। गैर—सरकारी स्कूल के शिक्षक बेहतर बुनियादी ढांचे और संसाधनों का हवाला देते हुए अपने कार्य वातावरण को उच्चतर मानते हैं। सरकारी स्कूल के शिक्षक नौकरी की सुरक्षा और लाभों से अधिक

संतुष्टि व्यक्त करते हैं, जबकि निजी स्कूल के शिक्षक उच्च वेतन की सरानहा करते हैं। गैर–सरकारी स्कूल के शिक्षक व्यावसायिक विकास के लिए अधिक अवसरों की रिपोर्ट करते हैं। निजी स्कूल के शिक्षक अपने प्रशासन द्वारा अधिक समर्थित महसूस करते हैं। सरकारी स्कूल के शिक्षकों को छात्र अनुशासन और कक्षा प्रबंधन के साथ अधिक चुनौतियों का सामना करना पड़ता है।गुणात्मक साक्षात्कार नौकरी की संतुष्टि कोप्रभावित करने वाले कारकों में सूक्ष्म अंतर्दृष्टि प्रकट करते हैं। सरकारी स्कूल के शिक्षक नौकरी की सुरक्षा और लाभों के महत्व पर जोर देते हैं, जबकि निजी स्कूल के शिक्षक सहायक कार्य वातावरण और पेशेवर विकास के अवसरों की भूमिका पर प्रकाश डालते हैं।

गैर सरकारी स्कूल के शिक्षक आम तौर पर उच्च नौकरी संतुष्टि की रिपोर्ट करते हैं, जबकि सरकारी स्कूल के शिक्षक नौकरी की सुरक्षा और लाभों के महत्व पर जोर देते हैं, जबकि सरकारी स्कूल के शिक्षक नौकरी की सुरक्षा और लाभों को अधिक महत्व देते हैं। सरकारी स्कूलों में चुनौतियों का समाधान, जैसे कि बुनियादी ढांचे और प्रशासनिक सहायता में सुधार, नौकरी की संतुष्टि को बढ़ा सकता है। इसके विपरीत, गैर–सरकारी स्कूल शिक्षक प्रतिधारण और संतुष्टि बढ़ाने के लिए अधि नौकरी स्थिरता और लाभ प्रदान करने पर ध्यान केंद्रित कर सकते हैं। शिक्षक की नौकरी की संतुष्टि कारकों के एक जटिल परस्पर क्रिया से प्रभावित होती है, जो भारत में सरकारी और गैर–सरकारी माध्यमिक विद्यालयों के बीच काफी भिन्न होती है। नीति निर्माताओं और स्कूल प्रशासकों को इन अंतरों को पहचानना चाहिए और शिक्षक संतुष्टि में सुधार करने के लिए लक्षित रणनीतियों को लागू करना चाहिए, जिससे अंततः शैक्षिक परिणामों में वृद्धि हों।

1. **बुनियादी ढांचे में सुधारः** सरकारी स्कूलों को अनुकूल शिक्षण वातावरण प्रदान करने के लिए अपने बुनियादी ढांचे को उन्नत करने को प्राथमिकता देनी चाहिए।

2. **प्रशासनिक सहायता बढ़ानाः** दोनों क्षेत्रों को शिक्षकों का समर्थन करने के लिए प्रभावी प्रशासनिक प्रथाओं पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए।

3. **व्यावसायिक विकासः** विशेष रूप से सरकारी स्कूलों में व्यावसायिक विकास के अवसरों का विस्तार करने से नौकरी की संतुष्टि बढ़ सकती है।

4. **वेतन और लाभों को संतुलित करनाः** गैर–सरकारी स्कूलों को प्रतिभागशाली शिक्षकों को आकर्षित करने और उन्हें बनाए रखने के लिए बेहतर नौकरी सुरक्षा और लाभ प्रदान करने पर विचार करना चाहिए।

1.2 शोध कथन

शोध या अनुसंधान (Research) किसी भी क्षेत्र में ज्ञान की खोज करना या विधिवत् अन्वेषण करने का कार्य है।

प्रस्तुत शोध कथन निम्नवत है –

" सरकारी एवं गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों के प्रधानाचार्यों की नेतृत्व शैली के सन्दर्भ में विद्यालयी वातावरण व अध्यापकों की कार्य संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन " ।

1.3 शोध समस्या में प्रयुक्त प्रत्ययों का संक्षिप्त विवरणः–

1.3.1 नेतृत्व शैली :–

नेतृत्व शैली से हमारा आशय प्रधानाचार्यों के सामान्य व्यवहार से है। व्यवहार का वह स्वरूप जो एक प्रधानाचार्य के लिए सामान्य रूप से प्रदर्शित करता है, नेतृत्व की शैली कहलाता है। एक नेतृत्व शैली प्रधानाचार्य के दर्शन, व्यक्तित्व, अनुभव एवं मूल्य प्रणाली का परिणाम है। यह अनुयायियों के प्रकार एवं संगठन में प्रचलित वातावरण पर भी निर्भर करता है।

1.3.2 विद्यालय वातावरणः–

प्रस्तुत शोध अध्ययन में विद्यालय वातावरण का अभिप्राय विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की कार्य अभिप्रेरण को मापने के लिए डॉक्टर मोतीलाल शर्मा द्वारा निर्मित एवं मानकीकृत उपकरण विद्यालय संगठनात्मक वातावरण वर्णात्मक प्रश्नावली में प्राप्त किये गए अंकों के रूप में माना जायेगा।

1.3.3 कार्य संतुष्टि

कार्य संतुष्टि एक जटिल एवं बहुमुखी अवधारणा है जिसका मतलब अलग–अलग लोगों के लिए अलग–अलग चीजें हो सकती है। कार्य संतुष्टि भावनाओं एवं विश्वासों का संग्रह है जो लोगों को उनके वर्तमान व्यवसाय के बारे में है। वर्तमान अध्ययन में शिक्षकों की कार्य संतुष्टि का आकलन करने के लिए डॉ मीरा दीक्षित द्वारा विकसित जॉब सैटीस्फैक्शन स्केल में वर्णित व्यावसायिक संतुष्टि के आठ विशिष्ट पहलुओं के संबंध शिक्षकों की व्यावसायिकी संतुष्टि का वर्णन किया गया है। ये आठ पहलू हैं, आंतरिक पहलू वेतन सेवा शर्तें एवं पदोन्नति, भौतिक सुविधाएँ, संस्थागत योजनाएँ एवं नीतियाँ, अधिकारियों के साथ संतुष्टि, सामाजिक स्थिति एवं परिवार कल्याण, छात्रों के साथ तालमेल एवं सहकर्मियों के साथ संबंध है।

1.3.4 माध्यमिक विद्यालयः–

वर्तमान अध्ययन में माध्यमिक विद्यालयों का तात्पर्य सह–शिक्षा माध्यमिक विद्यालयों से है जहाँ बारहवीं कक्षा तक की शिक्षा दी जाती है।

1.3.5 सरकारी विद्यालयः–

सरकारी स्कूल वे स्कूल होते हैं जो सरकार द्वारा नियंत्रित और चलाए जाते हैं।

1.3.6 गैर सरकारी विद्यालयः–

गैर सरकारी वे हैं जो व्यक्तियों या व्यक्तियों के समूह द्वारा चलाए जाते हैं।

1.4 शोध साहित्य सर्वेक्षण :–

1. Riyadi (2020)[21] ने विषय "लीडरशीप स्टाइल, इंफलुएंस लीडरशीप एंड आर्गेनाइजेशन क्लाइमेट ऑन वर्क मोटिवेशन जॉब सैटिस्फैक्शन एंड परफॉरमेंस" का अध्ययन किया और पाया कि नेतृत्व शैली का कर्मचारियों की संतुष्टि पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है।

2. kalkan et al (2020)[12] ने स्कूल के प्रधानाध्यापकों की नेतृत्व शैली, स्कूल संस्कृति और संगठनात्मक छवि के बीच संबंधों का अध्ययन किया। अध्ययन एक संबंधपरक सर्वेक्षण मॉडल के अनुसार तैयार किया गया है और इसमें तुर्की के कोन्या के सेल्कुकलू, कराटे और मेरम जिलों के 20 स्कूलों में काम रकने वाले 370 शिक्षक शामिल हैं। स्कूल के प्रधानाधपकों के नेतृत्व शैली के पैमाने, स्कूल संस्कृति के लिए पैमाने और संगठनात्मक छवि के पैमाने का उनयोग डेटा संग्रह उपकरण के रूप में किया गया था। वर्णनात्मक आकड़ों के अलावा डेटा के विश्लेषण के लिए पियर्सन के सहसंबंध, प्रतिगमन और पथ विश्लेषण का उपयोग किया गया था। यह पाया गया कि स्कूल के प्रधानाचार्य परिवर्तनकारी नेतृत्व विशेषताओं को प्रकट करते है, शिक्षकों द्वारा स्कूल संस्कृति की धारणा मजबूत होती है और शिक्षकों द्वारा संगठनात्मक छवि की धारणा मध्यम होती है। यह भी पाया गया कि स्कूल के प्रधानाचार्यों की नेतृत्व शैली के साथ–साथ नेतृत्व शैली, स्कूल संस्कृति और संगठनात्मक छवि के बीच महत्वपूर्ण संबंध है। स्कूल संस्कृति का नेतृत्व शैली और संगठनात्मक छवि दानों पर मध्यस्थ प्रभाव पड़ता है। यह नेतृत्व शैलियों की प्राप्ति के कारण है जिनकी स्कूली संस्कृति के माध्यम से एक संगठनात्कम छवि विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका है। यह शोध अनुमान प्रस्तुत करता है कि प्रधानाचार्य द्वारा प्रकट नेतृत्व संगठन के सदस्यों पर सकारात्मक प्रभाव डालता है और मजबूत स्कूल संस्कृति के निमार्ण में योगदान देता है, साथ ही नेतृत्व और स्कूल संस्कृति शैक्षिक संस्थान की संगठनात्मक छवि में सकारात्मक योगदान देता है।

3. Holeppanawar (2017) [10] ने अपने शोध विषय "माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों के मनोबल और संगठनात्मक स्वास्थ्य के सम्बन्ध में प्रमुखों के नेतृत्व व्यवहार का अध्ययन" में संबंध अध्ययन किया और

शिक्षकों के मनोबल और संगठनात्मक स्वास्थ्य के साथ नेतृत्व के व्यवहार का महत्वपूर्ण सकारात्मक सम्बन्ध पाया।

4. Shaikh and Ali (2013) [22] ने प्रिंसिपल लीडरशिप के बारे में अध्ययन किया और यह जांचने का कोशिश की कि क्या प्रिंसिपल की नेतृत्व शैली और ए (प्रदर्शन स्तर और बी) दुबई में स्कूलों में प्रिंसिपल क प्रभावशीलता के बीच कोई सम्बन्ध हैं इसने यह भी जाँच की कि क्या सहसंबंध प्रधानाचार्य के लिंग, अनुभव के वर्षों और स्कूल के स्तर (प्राथमिक, मध्यवर्ती और माध्यमिक) के अनुसार बदलते हैं। 34 सरकारी स्कूलों में शिक्षकों द्वारा पूर्ण किये गए एवोलियो और बास (1995) मल्टीफैक्टर लीडरशिप प्रश्नावली (एमएलक्यू) के माध्यम से प्रधानाध्यापकों की नेत्त्व शैली और प्रभावशीलता पर आंकड़े एकत्र किये गए थे। स्कूल के प्रदर्शन पर आंकड़े 2010 दुबई स्कूल निरीक्षण ब्यूरो की रिपोर्ट से प्राप्त किये गए थे। अध्ययन में पाया गया कि परिवर्तनकारी नेतृत्व शैली को सबसे अधिक बार नियोजित किया गया था, उसके बाद लेन–देन शैली और फिर निष्क्रिय शैली या परिहार शैली । अध्ययन में प्रधानाचार्य नेतृत्व शैली और उनकी प्रभावशीलता के बीच सकारात्मक सम्बन्ध पाया गया लेकिन स्कूल के प्रदर्शन के साथ कोई सम्बन्ध नहीं पाया गाया। अंत में प्रधानाचार्य की शैली और प्रभावशीलता प्रधानार्चा के लिंग और स्कूल के स्तर के अनुसार भिन्न होती है, लेकिन प्रधानाध्यापक के वर्षों के अनुभव के अनुसार नहीं। इस अध्ययन के निष्कर्ष संयुक्त अरब अमीरात में स्कूल प्रिन्सिपलशिप प्रदर्शन और प्रभावशीलता पर शोध का एक नया क्षेत्र खोलते हैं।

5. Pepper (2010)[19] ने अपने शोध लेख में निष्कर्ष निकाला कि परिवर्तनकारी/रुपांतरीय नेतृत्व परिवर्तन को लक्षित करता है जबकि संव्यवहार नेतृत्व प्रबंधन कार्यों को लक्षित करता हैं। ये दोनों सीखने के लिए अनुकूल वातावरण को स्थापित करने और बनाये रखने के लिए महत्वपूर्ण है। राष्ट्रपति ओबामा के प्रशासन के तहत प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षा अधिनियम के पुनाप्राधिकारण के साथ नीति निर्माताओं के पास वर्तमान अपेक्षाओं को पूरा करने के लिए स्कूलों को आगे बढाने के लिए आवश्यक प्रशिक्षण के साथ प्रधानाचार्यें को प्रदान करने का अवसर था।

6. Modiba(1997)[17] ने तीन चयनित स्कूलों में सहभागी , कोलेजियम , अनुमोदक और नेतृत्व की निर्देशात्मक शैली का किया और पाया कि स्कूल के प्रधानाचार्यों द्वारा नेतृत्व की अनुमोदक और निर्देशात्मक शैली का उपयोग किया जाता रहा थां।

7. Chakroborti (1990)[2] ने अपने शोध विषय ''पश्चिम बंगाल में माध्यमिक विद्यालयों के संगठनात्मक जलवयु का अध्ययन और अन्य प्रासंगिक चर के साथ इसका सम्बन्ध'' का अध्ययन किया और पाया की प्रधानाचार्यों के व्यवहार और स्कूल के संगठनात्मक वातावरण क बीच संबंधों का पता लगाया और उनके बीच प्रमुख महत्वपूर्ण सकारात्मक सहसंबंध पाया।

8. Venkatapathy (1990)[25] ने शीर्ष निजी सार्वजनिक क्षेत्र के संगठनों के तुलनात्मक विश्लषण में निश्चित नेतृत्व शैली के उपयोग द्वारा बनाई गई संगठनात्मक वातावरण का अध्ययन किया। निजी क्षेत्र के कार्यकारी ने शीर्ष नेतृत्व को सार्वजनिक क्षेत्र के अधिकारियों कह तुलना में अपने अधीनस्थो की ओर अधिक महत्वपूर्ण और कम विकासात्मक माना। सार्वजानिक क्षेत्र के अधिकारियों ने वातावरण को आत्म—विश्वास और अन्योन्याश्रितता के उचच स्तर को बढ़ावा देने के लिए अनुकूल माना। निजी क्षेत्र के अधिकारियों ने वातावरण को अक्षमता, निर्भरता और असंतोष को बढ़ावा देने के रूप में माना।

1.5 शोध अंतराल

प्रस्ताविक शोध सरकारी एवं गैर सरकारी माध्यमिक विद्याालयों के प्रधानाचार्यो की नेतृत्व शैली के संदर्भ में विद्यालयी वातावरण व अध्यापकों की कार्य संतुष्टि विषयक शोध बहुत कम हुए है। शोध की साहित्य समीक्षा से यह बात प्रदर्शित होती है कि सरकारी एवं गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों के प्रधानाचार्यों की नेतृत्व शैली के संदर्भ में विद्यालयी वातावरण व अध्यापकों की कार्य संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन करने वाले शोध भी लगभग नगण्य है। पूर्व में किये गए शोधों के भोगोलिक क्षेत्र भी वर्तमान में प्रस्तावित शोध—क्षेत्र से काफी अलग रहे है। प्रस्तुत शोध इन अंतरालों को पूरा करने का एक प्रयास होगा।

1.6 शोध का महत्व :—

किसी भी राष्ट्र निर्माण के लिए शिक्षा का सबसे अधिक महत्व है। भारत में शिक्षा का महत्व इसलिए अधिक बढ़ जाता है क्योंकि यहाँ की जनसंख्या अधिक है एवं यहाँ षिक्षा का ढांचा मिश्रित है। यहाँ शिक्षा सरकारी विद्यालयों के माध्यम से भी दी जाती हैं एवं निजी विद्यालयों के माध्यम से भी। जहां एक ओर निजी विद्यालय विद्यार्थियों पर शिक्षा का अत्यधिक दबाव डाल रहे हैं वहीं दूसरी ओर सरकारी विद्यालयों में मूलभूत सुविधाओं एवं षिक्षकों का भी अभाव है।

वर्तमान संदर्भ में माध्यमिक शिक्षा अधिक से अधिक प्रतियोगी होती जा रही है। माध्यमिक शिक्षा ऐसा आधार है जिस पर देश तथा इसके प्रत्येक नागरिक का विकास निर्भर करता है। हाल के वर्षों में भारत ने माध्यमिक शिक्षा में छात्रों की संख्या बरकरार रखने, उनकी नियमित उपस्थिति दर और साक्षरता के प्रसार के संदर्भ में काफी प्रगति की है। जहाँ भारत की उन्नत शिक्षा पद्धति को भारत देश के आर्थिक विकास का मुख्य योगदानकर्ता तत्व माना जाता है, वहीं भारत में माध्यमिक शिक्षा की गुणवत्ता फिलहाल एक चिंता का विषय है। प्रस्तुत शोध झारखंड राज्य से संबंधित है। प्रस्तावित शोध विद्यालय वातावरण, अध्यापकों की कार्य संतुष्टि एवं विद्यार्थियों की उपलब्धि के संदर्भ मैं सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालय प्रधानाचार्यों की नेतृत्व शैली का तुलनात्मक अध्ययन करने का एक प्रयास है। प्रस्तुत शोध–शोध क्षेत्र के लिए अत्यंत लाभकारी होगा। नीति–निर्माण मे यह भविष्य में बेहद काम आ सकता है। प्रस्तावित शोध सरकारी एवं गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों के प्रधानाचार्यों की नेतृत्व शैली के संदर्भ में विद्यालयी वातावरण व अध्यापकों की कार्य संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन करने का एक प्रयास है।

1.7 शोध के उद्देश्य –

1) सरकारी एवं गैर–सरकारी माध्यमिक विद्यालयों के प्रधानाचार्यों की नेतृत्वशैली का अध्ययन करना।

2) सरकारी एवं गैर–सरकारी माध्यमिक विद्यालयों के प्रधानाचार्यों की नेतृत्वशैली के विभिन्न आयामों का अध्ययन करना।

2.1) सरकारी एवं गैर–सरकारी माध्यमिक विद्यालयों के प्रधानाचार्यों की नेतृत्वशैली के प्रजातांत्रिक (Democratic) आयाम का अध्ययन करना ।

2.2) सरकारी एवं गैर–सरकारी माध्यमिक विद्यालयों के प्रधानाचार्यों की नेतृत्वशैली के सत्तावादी (Authoritarian) आयाम का अध्ययन करना ।

2.3) सरकारी एवं गैर–सरकारी माध्यमिक विद्यालयों के प्रधानाचार्यों की नेतृत्वशैली के हस्तक्षेप रहित (Laissez-faire) आयाम का अध्ययन करना ।

3) सरकारी एवं गैर–सरकारी माध्यमिक विद्यालयों कें विद्यालयी वातावरण का अध्ययन करना।

(4) सरकारी एवं गैर–सरकारी माध्यामिक विद्यालयों के विद्यालयी वातावरण के विभिन्न आयामों का अध्ययन करना।

4.1) सरकारी एवं गैर–सरकारी माध्यामिक विद्यालयों की विद्यालयी वातावरण के बंधनमुक्त (Disengagement) आयाम का अध्ययन करना।

4.2) सरकारी एवं गैर–सरकारी माध्यामिक विद्यालयों की विद्यालयी वातावरण के अलगाव (Alienation) आयाम का अध्ययन करना।

4.3) सरकारी एवं गैर–सरकारी माध्यामिक विद्यालयों की विद्यालयी वातावरण के मनोबल (Aspirit) आयाम का अध्ययन करना।

4.4) सरकारी एवं गैर–सरकारी माध्यामिक विद्यालयों की विद्यालयी वातावरण के आत्मीयता (Intimacy) आयाम का अध्ययन करना।

4.5) सरकारी एवं गैर–सरकारी माध्यामिक विद्यालयों की विद्यालयी वातावरण के शारीरिक–मानसिक बाधा (Psycho-physical Hindrance) आयाम का अध्ययन करना।

4.6) सरकारी एवं गैर–सरकारी माध्यामिक विद्यालयों की विद्यालयी वातावरण के नियंत्रण (Control) आयाम का अध्ययन करना।

4.7) सरकारी एवं गैर–सरकारी माध्यामिक विद्यालयों की विद्यालयी वातावरण के उत्पदान जोर (Production Emphasis) आयाम का अध्ययन करना।

4.8) सरकारी एवं गैर–सरकारी माध्यामिक विद्यालयों की विद्यालयी वातावरण के मानवता (Humanity Thrust) आयाम का अध्ययन करना।

5) सरकारी एवं गैर–सरकारी माध्यामिक विद्यालयों के अध्यापकों की कार्यसंतुष्टि का अध्ययन करना।

6) सरकारी माध्यामिक विद्यालयों के प्रधानाचार्यों की उच्च एवं निम्न नेतृत्वशैली के संदर्भ में विद्यालयी वातावरण का अध्ययन करना।

7) गैर–सरकारी माध्यामिक विद्यालयों के प्रधानाचार्यों की उच्च एवं निम्न नेतृत्वशैली के संदर्भ में विद्यालयी वातावरण का अध्ययन करना।

8) सरकारी माध्यामिक विद्यालयों के प्रधानाचार्यों की उच्च एवं निम्न नेतृत्वशैली के संदर्भ में अध्यापकों की कार्य संतुष्टि का अध्ययन करना।

9) गैर–सरकारी माध्यामिक विद्यालयों के प्रधानाचार्यों की उच्च एवं निम्न नेतृत्वशैली के संदर्भ में अध्यापकों की कार्य संतुष्टि का अध्ययन करना।

10) सरकारी माध्यमिक विद्यालयों के प्रधानाचार्यो की नेतृत्वशैली तथा विद्यालयी वातावरण का सह-संबंध ज्ञात करना।

11) गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों के प्रधानाचार्यो की नेतृत्वशैली तथा विद्यालयी वातावरण का सह-संबंध ज्ञात करना।

12) सरकारी माध्यमिक विद्यालयों के प्रधानाचार्यो की नेतृत्वशैली तथा अध्यापकों की कार्यसंतुष्टि का सह-संबंध ज्ञात करना।

13) गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों के प्रधानाचार्यो की नेतृत्वशैली तथा अध्यापकों की कार्यसंतुष्टि का सह-संबंध ज्ञात करना।

1.8 शोध की परिकल्पनाएंः–

1) सरकारी एवं गैर–सरकारी माध्यमिक विद्यालयों के प्रधानाचार्यों की नेतृत्वशैली में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

2) सरकारी एवं गैर–सरकारी माध्यमिक विद्यालयों के प्रधानाचार्यों की नेतृत्वशैली के विभिन्न आयामों में कोई सार्थक अन्तर नहीं हैं।

2.1) सरकारी एवं गैर–सरकारी माध्यमिक विद्यालयों के प्रधानाचार्यों की नेतृत्वशैली के प्रजातांत्रिक (Democratic) आयाम में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

2.2) सरकारी एवं गैर–सरकारी माध्यमिक विद्यालयों के प्रधानाचार्यों की नेतृत्वशैली के सत्तावादी (Authoritarian) आयाम में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

2.3) सरकारी एवं गैर–सरकारी माध्यमिक विद्यालयों के प्रधानाचार्यों की नेतृत्वशैली के हस्तक्षेप रहित (Laissez-faire) आयाम में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

3) सरकारी एवं गैर–सरकारी माध्यमिक विद्यालयों कें विद्यालयी वातावरण में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

(4) सरकारी एवं गैर–सरकारी माध्यामिक विद्यालयों के विद्यालयी वातावरण के विभिन्न आयामों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

4.1) सरकारी एवं गैर–सरकारी माध्यामिक विद्यालयों की विद्यालयी वातावरण के बंधनमुक्त (Disengagement) आयाम में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

4.3) सरकारी एवं गैर–सरकारी माध्यामिक विद्यालयों की विद्यालयी वातावरण के मनोबल (Aspirit) आयाम में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

4.4) सरकारी एवं गैर–सरकारी माध्यामिक विद्यालयों की विद्यालयी वातावरण के आत्मीयता (Intimacy) आयाम में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

4.5) सरकारी एवं गैर–सरकारी माध्यामिक विद्यालयों की विद्यालयी वातावरण के शारीरिक–मानसिक बाधा (Psycho-physical Hindrance) आयाम में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

4.6) सरकारी एवं गैर–सरकारी माध्यामिक विद्यालयों की विद्यालयी वातावरण के नियंत्रण (Control) आयाम में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

4.7) सरकारी एवं गैर–सरकारी माध्यामिक विद्यालयों की विद्यालयी वातावरण के उत्पदान जोर (Production Emphasis) आयाम में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

4.8) सरकारी एवं गैर–सरकारी माध्यामिक विद्यालयों की विद्यालयी वातावरण के मानवता (Humanity Thrust) आयाम में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

5) सरकारी एवं गैर–सरकारी माध्यामिक विद्यालयों के अध्यापकों की कार्य संतुष्टि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

6) सरकारी माध्यामिक विद्यालयों के प्रधानाचार्यों की उच्च एवं निम्न नेतृत्वशैली के संदर्भ में विद्यालयी वातावरण में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

7) गैर–सरकारी माध्यामिक विद्यालयों के प्रधानाचार्यों की उच्च एवं निम्न नेतृत्वशैली के संदर्भ में विद्यालयी वातावरण में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

8) सरकारी माध्यामिक विद्‌यालयों के प्रधानाचार्यों की उच्च एवं निम्न नेतृत्वशैली के संदर्भ में अध्यापकों की कार्य संतुष्टि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

9) गैर–सरकारी माध्यामिक विद्‌यालयों के प्रधानाचार्यों की उच्च एवं निम्न नेतृत्वशैली के संदर्भ में अध्यापकों की कार्य संतुष्टि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

10) सरकारी माध्यमिक विद्‌यालयों के प्रधानाचार्यो की नेतृत्वशैली तथा विद्‌यालयी वातावरण में कोई सार्थक सह-सम्बन्ध नहीं है ।

11) गैर सरकारी माध्यमिक विद्‌यालयों के प्रधानाचार्यो की नेतृत्वशैली तथा विद्‌यालयी वातावरण में कोई सार्थक सह-सम्बन्ध नहीं है ।

12) सरकारी माध्यमिक विद्‌यालयों के प्रधानाचार्यो की नेतृत्वशैली तथा अध्यापकों की कार्यसंतुष्टि में कोई सार्थक सह-सम्बन्ध नहीं है ।

13) गैर सरकारी माध्यमिक विद्‌यालयों के प्रधानाचार्यो की नेतृत्वशैली तथा अध्यापकों की कार्यसंतुष्टि में कोई सार्थक सह-सम्बन्ध नहीं है ।

1.9 शोध की परिसीमनः–

1. शोधार्थी द्वारा प्रस्तुत शोध झारखंड राज्य के रांची शहर के सरकारी एवं गैर–सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में किया जायेगा।
2. शोध रांची शहर के 25 सरकारी एवं 25 गैर–सरकारी माध्यमिक विद्यालयों के कार्यरत प्रधानाचार्यों, शिक्षकों एवं विद्यार्थियों तक ही सीमित किया जाएगा।
3. शोध "सरकारी एवं गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों के प्रधानाचार्यों की नेतृत्व शैली के संदर्भ में विद्यालयी वातावरण एवं अध्यापकों की कार्य संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन" तक ही सीमित किया जाएगा।

1.10 शोध विधि

वर्तमान अध्ययन में वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि एवं अवलोकन अनुसूची का प्रयोग किया जायेगा।

वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि– वर्णनात्मक सर्वे विधि डेटा एकत्रित करने के लिए सर्वोत्तम विधि है। यह विधि ऑनलाईन तथा ऑफलाईन मोड में आयोजित की जा सकती है। यह विधि शोध के लिए बहुत उपयोगी है।

1.11 शोध की जनसंख्या

जब हम लोगों के समूह के बारे में शोध करते हैं तो उस समूल के प्रत्येक व्यक्ति से आंकड़े एकत्र करना शायद ही कभी संभव होता है। इसके बजाय हम एक प्रतिदर्श का चयन करते हैं। प्रतिदर्शन व्यक्तियों का समूह है जो वास्तव में शोध में भाग लेंगे। परिणामों से वैध निष्कर्ष निकालने के लिए किसी को सावधानीपूर्वक यह तय करना होगा कि हम एक ऐसे प्रतिदर्श का चयन कैसे करेंगे जो समग्र रूप से समूह का प्रतिनिधि हो। न्यायदेश प्रतिदर्श अभिकल्प दो प्रकार के होते हैं जिनका उपयोग प्रतिदर्श का चयन करने के लिए किया जा सकता है।

प्रथम प्रायिकता प्रतिदर्श अभिकल्प में यद्च्छिक चयन शामिल है जिससे आप पुरे समूह के बारे में सही सांख्यिकीय निष्कर्ष निकाल सकते हैं। दुसरे गैर–प्रायिकता प्रतिदर्श अभिकल्प में सुविधा या अन्य मानदंडों के आधार पर गैर–यद्च्छिक चयन शामिल है जिससे व्यक्ति आसानी से आंकड़े एकत्र कर सकता है वर्त्तमान अध्ययन में शोधकर्त्ता प्रायिकत्ता प्रतिदर्श अभिकल्प का प्रयोग करेगा।

1.12 न्यायदर्श

अध्ययन का प्रतिदर्श यद्च्छिक प्रतिचयन विधि द्वारा रांची के माध्यमिक स्तर के विद्यालयों से किया जायेगा। प्रतिदर्श में सम्पूर्ण इकाइयों की प्रस्तावित संख्या 500 होंगी जिससे से 250 शिक्षक सरकारी एवं 250 शिक्षक गैर–सरकारी सरकारी विद्यालयों से चयनित होंगी।

1.13 आंकड़ा संग्रह के लिए उपकरण

(i) **शिक्षकों के लिए जॉब सैटिस्फैक्शन स्केल (JSST)** –डॉ मीरा दीक्षित द्वारा विकसित एवं मानकीकृत Job satisfaction Scale for Teachers (JSST) का उपयोग अध्ययन में शिक्षकों की व्यवसायिक संतुष्टि को मापने के लिए किया जायेगा।

(ii) **विद्यालय संगठनात्मक वातावरण वर्णनात्मक प्रश्नावलीः–** विद्यालयों में विद्यालयी वातावरण को मापने के लिए डॉ मोतिलाल शर्मा द्वारा निर्मित मानकीकृत उपकरण विद्यालय संगठनात्मक वातावरण प्रश्नावली का प्रयोग किया जायेगा।

1.14 चर (variable):-

प्रस्तुत शोध में तीन मुख्य चर है. प्रधानाचार्यो की नेतृत्वशैली स्वतंत्र चर हैं तथा विद्यालय वातावरण एवं अध्यापकों की कार्य संतुष्टि आश्रित चर हैं।

1.15 शोध में प्रयुक्त सांख्यिकी तकनीकी :–

आँकड़ा का विश्लेषण निम्र सांख्यिकी विधि द्वारा की जाएगी।

(a) केन्द्रीय प्रवृति मापन–माध्य

(b) माध्य का प्रसार–मानक विचलन

(c) उपसमूहों के बीच टी–परीक्षण

(d) सह–सम्बन्ध गुणांक

1.16 संभावित अध्याय :–

(1) प्रस्तावना

(2) संबंधित साहित्य का सर्वेक्षण

(3) शोध अभिकल्प

(4) प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या

(5) शोध का निष्कर्ष, शैक्षिक निहितार्थ एवं भावी अध्ययन हेतु सुझाव

(6) संदर्भग्रंथ सूची

संदर्भग्रंथ सूची :–

[1]. Agarwal, P. (2009), Indian Higher Education: Envisioning the Future, SAGE Publications India.

[2]. Chakraborti , M. (1990). A study of organizational climate of secondary schools in West Bengal and its correlation with relevant variables, Unpublished doctoral thesis , University of Calcutta , West Bengal.

[3]. Chandra, S. (2010), Job satisfaction among secondary school teachers, Educational Research and Reviews, 5(12), 752-755

[4]. Chudgar, A., & Quin, E. (2012), Relationship between private schooling and achievement: Results from rural and urban India, Economics of Education Review, 31(4), 376-390.

[5]. Day, C., & Sammons, P. (2013), Successful school leadership, Maidenhead: Open University Press.

[6]. Desai, S., Adams, C. D., & Dubey, A. (2009), Segmenting India's educational pyramid: Examining the educational choices that shape gender and social inequality in India. In Indian Social Structure and Change (pp. 151-181), SAGE Publications India.

[7]. Dinham, S., & Scott, C. (2000), Moving into the third, outer domain of teacher satisfaction, Journal of Educational Administration, 38(4), 379-396

[8]. Gupta, M., & Gehlawat, M. (2013), Job satisfaction and work motivation of secondary school teachers, Journal of Education and Practice, 4(9), 222-223

[9]. Herzberg, F. (1959), The Motivation to Work, New York: John Wiley & Sons.

[10]. Holeppanawar Ratnam. M. (2017), A study of leadership behavior of hdeads in relation to teacher's morale and organizational health of srcondary schools, Doctoral thesis, Karnatak University, Retrieved from http://hdl.handle.net/10603/235812

[11]. Ingersoll, R. (2001), Teacher turnover and teacher shortages: An organizational analysis, American Educational Research Journal, 38(3), 499-534

[12]. Kalkan,U., Altinay Aksal, F., Altinay Gazi, Z., Atasoy, R., $ Dagh, G. (2020), the relationship between school administrator's leadership styles, school culture and organizational image, SAGE Open. Retrieved from http://doi.org/101177/2158244020902081

[13]. Kingdon, G. G. (2007), The progress of school education in India, Oxford Review of Economic Policy, 23(2), 168-195

[14]. Kingdon, G. G., & Teal, F. (2010), Teacher unions, teacher pay, and student performance in India: A pupil fixed effects approach. Journal of Development Economics, 91(2), 278-288

[15].Kumar, K. (2016), Quality of Education in Rural India: The Rote of Government and Private Schools, Journal of Educational Planning and Administration, 30(1), 1-14

[16].Mehrotra, S. (2006), Reforming elementary education in india: A menu of options, International Journal of Educational Development, 26(3), 261-277

[17].Modiba, S, n. (1997), Leadership sryles of school principals in three selected secondary school on northern province, Unpublished M.Ed. dissertation, Rand Africans University, Johannessburg, Retrieved feom http://eore.ac.uk/download/pdf/18219887.pdf

[18].OECD. (2019), Education at a Glance 2019: OECD Indicators, OECD Publishing.

[19]. Pepper , K. (2010), Effective principals skillfully balance leadership styles to facilitate student success: A focus for the reauthorization of ESEA, Planning and Changing, 41(1/2,24-56, Retrieved from http://files.cric.ed.gov/fulltext/FJ952358.pdf

[20].Ramachandran, V., Pal, M., Jain, S., Shekar, S., & Sharma, J. (2018), Teachers in the Indian education system: Synthesis of a nine-state study, National Council of Educational Research and Training (NCERT).

[21]. Riyadi , S. (2020), A compative study of organizational climate in school, International Joural of Innocation, Crcativity and Change, 13 (7), 62-76. Retried from http://www.ijicc.net/

[22].Shaikh, A., T., $ Ali, I. (2013), Principal leadership style , school performance and principal effectiveness in Dubai schools. International Journal of Research Studies in Education , 2(1), 14-54 Retrieved from DOI: https://doi.org/10.5861/ijrse.2012.86

[23].Singh, R., & Sarkar, S. (2015), Does teaching quality matter? Students learning outcome related to teaching quality in public and private primary schools in India, International Journal of Educational Development, 41, 153-163.

[24].Tilak, J. B. G. (2009), Financing elementary education in India, SAGE Publications India.

[25].Venkatapathy, R. (1990), Perception of top management leadership styles and climate: A study of public and private executives, Indian Journal of Industrial Relations, 25 (3) , 303-311, Retrieved from http://hdl.handle.net/10603/267696